www.gita-society.com/hindifile/gitamahima.mp3

श्री गीताजी की महिमा

(पंडित दीनानाथ 'दिनेश' जी की हरिगीता से)

ॐ श्री गणेशाय नमः ॐ

वसुदेवसुतं देवं, कंसचाणूर मर्दनम् ।
देवकी परमानन्दं, कृष्णं वन्दे जगद् गुरुम् ॥१॥

मूकं करोति वाचालं, पङ्गुं लङ्घयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे, परमानन्द माधवम् ॥२॥

गीता हृदय भगवान का, सब ज्ञान का शुभ सार है ।
इस शुद्ध गीता ज्ञान से ही, चल रहा संसार है ॥१॥
गीता परमविद्या सनातन, कर्म शास्त्र प्रधान है ।
परबह्म रूपी मोक्षकारी, नित्य गीता-ज्ञान है ॥२॥
यह मोह माया कष्टमय, तरना जिसे संसार हो ।
वह बैठ गीता नाव में, सुख से सहज में पार हो ॥३॥
संसार के सब ज्ञान का, यह ज्ञानमय भंडार है ।
श्रुति, उपनिषद् , वेदान्त-ग्रन्थों का परम शुभ सार है
गाते जहां जन नित्य "हरिगीता" निरंतर नेम से ।
रहते वही सुख-कन्द नटवर, नन्द-नन्दन प्रेम से ॥५॥
गाते जहां जन गीत-गीता, प्रेम से धर ध्यान हैं ।
तीरथ वहीं भव के सभी, शुभ शुद्ध और महान हैं ॥६
धरते हुए जो ध्यान गीता-ज्ञान का तन छोड़ते ।
लेने उसे माधव मुरारी, आप ही उठ दौड़ते ॥७॥
सुनते-सुनाते नित्य, जो लाते इसे व्यवहार में ।
पाते परम-पद ठोकरे, खाते नहीं संसार में ॥८॥

ॐ